International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.1 Sept – Oct 2022

वनसंपदा – विभिन्न जीवनदायी संसाधनो का व्यवस्थापन और विकास

डॉ. प्रा. रजत रविन्द्रनाथ मंडल
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग) महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय, बल्लारपूर, जिहा चंद्रपूर (महा.) ४४२७०१
Corresponding Author- **डॉ. प्रा. रजत रविन्द्रनाथ मंडल**
Email id: rajatmandal1001@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7266708

सारांश (Abstract) : मानव जिवन के विकास प्रक्रिया मे मानव ने वन, धरती, पानी जैसे पर्यावरणीय घटको का अपनी इच्छा के अनुसार प्रयोग किया। इस संघर्ष और प्रक्रिया मे विभिन्न प्रकार के समस्याओ का जन्म हुआ । इस संघर्ष और प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के समस्याओं का जन्म हुआ। वायु, जल और भूमि प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसे समस्याओ का निर्माण हुआ। भारत जैसे कृषि प्रधान देश मे ही कृषि और जिवन कठीन होता हुआ दिखाई दे रहा है। जिसका प्रभाव वाणिज्य तथा छोटे–बड़े उद्योग पर भी आ रहा है। इन सभी समस्याओं के कारण पर्यावरण का नाश हो रहा है। जिससे जिवनदायी संसाधन के साथ–साथ धन (वित्त) का नाश भी हो रहा है। इस कारण पर्यावरण तथा वनसंपत्ति का संरक्षण करना केवल सरकार की नही अत: आस–पास रहनेवाले लोगो का भी है। क्योंकि पर्यावरण तथा वनसंपत्ति एक जिवनावश्यक संसाधन है, जिससे आर्थिक संवृध्दि प्राप्त किया जा सकता है।

परिचय (Introduction) : वनसंपत्ति, पर्यावरण, उद्योग, रोजगार, व्यापार, कृषि जैसे घटको में और मानव जीवनदायी घटको मे एक गहरा अंतरसंबंध है। जैसे की पर्यावरण पर होनेवाले बदलावट के कारण खेतो की फसल का उत्पादन प्रभावित होता है और उससे व्यापार–उद्योग मे लगनेवाले कच्चे माल की कमी हमे उस कालांतर मे दिखाई देता है। अत: व्यापार के लिए व्यापारिक माल अर्थात मानव संसाधन और उद्योग के मिश्रण से तैयार होता है। इन सभी प्रक्रियाओं के माध्यम से रोजगार की निर्मीती के साथ–साथ लोगो की आय और उपभोग करनेवाले वस्तुओ का भी निर्माण होता है। इस विकास प्रक्रिया मे मानव सबसे महत्वपूर्ण घटक है तथा उसके भरणपोषण मे लगनेवाले इंधन अर्थात अन्न–जल भी पर्यावरण और कुछ अंश तक वनसंपत्ति पर निर्भर करता है। वनसंपत्ति, पर्यावरण, विकास और संवृध्दि के संबंध को ध्यान मे रखते हुए मानव संवृध्दि के अनुकूल होनेवाले आर्थीक और अन्य गतिविधियो के संबंध मे अध्ययन करना आज समय और मानवता की जरूरत है।

कुंजी शब्द (Key Words) : वनसंपत्ति, संवृध्दि, मानवीय विकास इत्यादि।

उद्देश्य (Objective) :-: १) वनसंपत्ति से मानवीय जीवन का विकास और उसके महत्वो का अध्ययन करना।

परिकल्पना (Hypothesis) :: वनसंपदा से मानविय जीवन सरल तथा लोगों की आय का एक मुख्य स्त्रोत है।

वनसंपत्ति किसे कहते है (Meaning of Forest) : वन, जहॉ पर विभिन्न प्रकार की वनस्पति, जीवजंतु, प्राणी, वेल वनस्पति, वृक्ष, अनेक प्रकार के औषधिय पौधे, रासायनिक द्रव्य, पाणी, प्रकाश, पत्थर इत्यादि सभी प्रकार के जीवित और निर्जीव घटकों को मिलाकर वन तथा वनसंपत्ति कहलाते है। Forest is a well balanced eco system containing high levels of biodiversity (Tippat, 2015).

वनो को पुराण और इतिहास मे गौरवपूर्ण स्थान : महात्मा गांधी, संत तुकाराम, छत्रपती शिवाजी महाराज, गौतम बुध्द, आचार्य चाणक्य, रिचर्ड सेंट, डग्लस इ. बार्बनेकर जैसे अनेक महामानव ने वृक्ष और वनसंपत्ति के महत्व को लेकर अनेक प्रकार से जनजीवन को समझाया है।

भारत मे वन तथा वनसंपत्ति की स्थिती : हमारे भारत का लगभग ७५२ लाख हेक्टर भूमी वनसंपत्ति से विद्यमान है। बढती हुई जनसंख्या, शहरीकरण उद्योग जैसे अनेक कारणो से वन तथा वनसंपत्ति बड़ी तेजी से घट रही है। भारतीय वनो मे लगभग ३५० प्रकार के प्राणी, लगभग १२५० प्रकार के पक्षी और लगभग २००५० प्रकार के कीडे मकोडे पाए जाते है। उसमे लगभग १५००० वनसंपत्ति के साथ–साथ विभिन्न प्रकार के वृक्ष पाया जाता है। उसमे से कुछ प्रजाती के वृक्ष केवल भारत के वनो मे ही पाया जाता है। अत: वनसंपत्ति से अनेक प्रकार के जिवनदायी वस्तू का निर्माण तथा उपभोग करने का अवसर प्राप्त होता है।

वन संपत्ति की उपयोगिताएँ : वन हमारे लिए अधिक उपयोगी है । वन संपत्ति के देन असीम है। जिसकी कल्पना भी नही कर सकते उसकी कोई सीमाएँ नही होती है । वन से हमे कितने उपयोगी और मुल्यवान वस्तुएँ मिलती है। वन से लकडी मिलती है जिससे फर्नीचर बनाने, इमारत बनाने वाली लकडी, इसके अलावा लकडी जलाने के रूप मे उपलब्ध होती है, अगरबत्ती की लकडीयॉ, नाव, वोट छोटे और बडे जहाज, रेलवे की स्लीपर कोच, वन के विभिन्न प्रकार के औषधियॉ, इत्यादि सामग्रीयो का भंडार उपलब्ध है। लकडी और बास से हम कागज के साथ साथ विभिन्न प्रकार के घरेलु तथा खोज जगत के अनेक वस्तुओ का निर्माण कर सकते है।

वन संपत्ति के आवश्यकताएँ तथा महत्व : वन संपत्ति की महत्व और आवश्यकताएँ अधिक महत्वपूर्ण होती है। वन से ही हे शुध्द हवाएँ और प्राणवायू मिलती है जिससे पुरे संसार के पशु–पक्षीयो तथा अन्य जीवन को ऑक्सीजन प्राप्त होता है। वन के बिना ऑक्सीजन तथा अनेक जीवनदायी औषधीयो के बारे मे कल्पना नही कर सकते । वन से हमे फल, फुल, गोंद, रस एवं विविध प्रकार के सुगंधित वस्तुए प्राप्त होती है। इसके अलावा वनसामग्री मे कपास, रेशम, खुशबुदार तेल, विविध किट, पतंग से मिलती है। चंदन के लकड़ी और उसके वृक्ष जो की बहुत मुल्यवान होती है, उसका श्रोत भी वन ही है। इसके कारण ही अनेक लोगो को रोजगार प्राप्त होता है। वन अनेक जीव–जंतु के आश्रय का स्थान है। वन से ही मनुष्य की आर्थिक गतिविधियॉ एवं संस्कृति का जन्म हुआ है।

निर्मल वास्वानि १९७८ मे वृक्ष के सामाजिक अध्ययन करके उसके महत्व को स्पष्ट किया है।

१. वृक्ष के कारण ध्वनि प्रदुषण कम होता है।
२. हर रोज मध्यम एवं वृध्द वृक्ष लगभग २.३५२ किलो कार्बन डाइआक्साइड वायु (Co_2) हमारे आसपास से शुध्द करके लगभग १.६१२ किलो प्राणवायु (ऑक्सीजन) पर्यावरण मे छोडता है।
३. रास्ते के दोनो ओर वृक्ष लगाने से, प्रवास के समय तापमान लगभग ३.१ सेल्सियस कम होता है।
४. पिपल और कडूनिम के वृक्ष के आस–पास लगभग ८८०० टन पानी हर साल जमीन के निचे आकर्षित होता है जिसके कारण जमीन के उपरी भाग मे पाणी का स्तर अच्छा रहता है।

भु–संरक्षण : कुछ जगह पर वृक्ष के कमी के कारण सुर्य किरण बीना किसी भी रूकावट के भूमि पर पड़ते है, जिससे वहॉ पर वैश्वीकरण हो जाता है। जगह पर दिन मे गर्मी एवं रात्री मे जल्दी ठंड पडती है।

वन एवं जमीन की परिपक्वता : वन में जैवविविधता है जिसके कारण वन मे विविध किट, पतंग, प्राणी, पक्षीयो का अस्तित्व है। मृत प्राणी के अवशेष अधिक वर्ष जमीन पर पडे रहने पर जमीन की उपजता बढ जाती है। जिससे जमीन का स्वस्थ अच्छा रहता है।

जल व्यवस्थापन : जल पर्यावरण को संतुलित रखता है। वृक्ष के नीचे की जमीन मे जल का संतुलन अच्छा होता है। जिससे जल–जिवन और पर्यावरण निर्धारित क्रम मे चलते रहता है।

बढते तापमान को रोकने के लिए वृक्ष के उपयोग : आज संपूर्ण विश्व के सामने बढ़ता हुआ तापमान एक समस्या बनकर सबके ऊपर आ गया है। इस बढ़ते तापमान को कम करने के लिए अनेक मुद्रा खर्चा तथा अनेक प्रकार के जीव–जंतु को हानी पहुचती है। ग्लोबल वार्मिंग जैसे अनेक प्रकार के समस्याँओ का समाधान हमे वन तथा वृक्षो से प्राप्त होता है।

ध्वनि प्रदुषण को रोकने मे सहायता : वन संपदा तथा वृक्षो से ध्वनि प्रदुषण को रोकने मे सहायता मिलती हें जंगल हमे अनेक प्रकार के प्रदुषण को रोकने मे सहायता करता हैं हमे अनेक प्रकार के संसाधनो से अवगत कराता है, तथा विविध प्रकार के वन संपदा तथा रोजगार के अवसर भी प्रदान करवाता है।

ओजोन लेयर की निर्मिती मे सहायता : वन तथा वृक्ष आज बडी तेजी से हमारे धरती पर से कम होते हुए जा रहे है। जिसके कारण ऑक्सीजन की मात्रा हमारे पर्यावरण से कम होता हुआ प्रतीत हो रहा है। जिससे ओजोन लेयर कमजोर हो रहा है और कही –कही वह तो बहुत कमजोर हो गया है। इसके फलस्वरूप सुर्य की अतिनील किरने बडी सरलता से धरती पर पहुच रही है। जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ हमारे पृथ्वीपर निर्माण हो रही है । इस समस्याओ के समाधान के लिए वृक्ष लगाकर और वनो को संरक्षण प्रदान करके हम वायुमंडल मे ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ा सकते है जो ओजोन लेयर को सही मात्रा मे निर्मित करते हुए धरती पर जीवन को संरक्षण प्रदान करता है।

स्वास्थय तथा आरोग्या मे सहायता : पेड़–पौधे किसी भी रोगी को स्वस्थ होने मे सहायता करते है। सुबह तथा शाम के समय वृक्ष तथा पेड़ के पास तथा पार्क या फिर गार्डन मे टहलने से मनोविकार तथा मानसिक रोगो से मुक्ति मिलती है। वन संपदा से हमे अनेक प्रकार के औषधीया प्राप्त होती है, जिससे हृदय रोग, चर्म रोग, वात, पित्त जैसे अनेक रोगो का उपचार बडी सरलता से हो जाता है।

डॉ. प्रा. रजत रविन्द्रनाथ मंडल

वन एवं जैवविविधता : वन अनेक प्रकार के पशु पक्षी, किट, पतंग, जीव–जंतु का आश्रय स्थान है। विभिन्न जीव, जंतु के आश्रय के कारण विभिन्न प्रकार के फायदे, वन्यजीव संरक्षण तथा खनिज उत्पादन मे सहायता मिलती है।

वन संपत्ति एवं आर्थिक विकास : हमारे धरती के अनेक देशो के मुख्य आय का स्त्रोत–ज्यादातर वनसंपदा है। कछ ऐसे भी देश है जिनकी ८०% से भी ज्यादा लोग वन रोजगार पर आश्रित है। वन संपत्ति तथा उनके व्यवस्थापन से अधिक से अधिक मात्रा मे रोजगार निर्माण होता है। वर्तमान समय मे कम वृक्षो वाले क्षेत्रो मे से संसाधनो का सही उपयोग करके लोग छोटे–मोटे रोजगार निर्माण करके अपनी जीवनशैली को चला रहे है। जिस क्षेत्र मे वन का नाश हुआ वहॉ पर आज गरीबी, भुखमरी एवं अनेक प्रकार के संकट ने जन्म लिया है। आकडो के अनुसार भारत के लगभग ७५० लाख हेक्अर भूखंड वन के अंतरगत स्थित है। वहॉ से केवल वन ही वन दिखाई देते है। इसकी दुसरी ओर अनेक भूखंड ऐसे है जहॉ पर खाली जमीन होने के कारण भारत सरकार वहॉ पर वनसंपदा का विभिन्न प्रकल्प (Project) का विस्तारीकरण करके अनेको लोगो के रोजगार का मार्ग निर्माण करने को सोच रही है। हमे इस बात का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए की नए वृक्षारोपन करने के बाद हमे पुराने वृक्षो को काटना नही चाहिए, इससे वन तथा वनसंपदा का संतुलन बिगड़ सकता है। हमारा भारत देश प्रतिवर्ष वनसंपदा तथा विभिन्न वन औषधियो से अनेक विदेशी मुद्रा कमाता है।

इन सभी तथ्यों से यह सिद्ध होता है, की परिकल्पना (Hypothesis) : वनसंपदा से मानविय जीवन सरल तथा लोगों की आय का एक मुख्य स्त्रोत है, यह सही है।

निष्कर्ष (Conclusion) : हमारा भारत देश वनसंपदा मे समृध्द वाला देश है। प्रकृति ने इसे अनेक प्रकार के जैवविविधता से सुशोभित किया हैं। जिसके कारण यह वन, वायु, जल को संतुलन मे रख सकता है। जल के सदुपयोग से हमारा भारत कृषिकार्य करके अनेक प्रकार के रोजगार तथा धन की प्राप्ति करता है। उसी तरह से वनउद्योग आजकल हमारे जीवन के विभिन्न आयामो को परिपूर्ण कर रहा है। अत: हम यह कह सकते है कि, मनुष्य के सतत विकास (Sustainable Development) मे वन एक महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है।

Bibliography

1. Tippat, S. (2015). Soil Fertility Assessment of Different Habitats of Pohara-Malkhed Forest Area, District Amravati. *Environment Management and Sustainable Economic Development* (p. 75). Nagpur: Jawaharlal Nehru Arts, Commere and Science College,Nagpur.